

MS. DROUPADI GHIMIRAY

Miss Droupadi Ghimiray is a famous social worker and the Founder President of Sikkim Viklang Sahayata Samiti (presently known as Sikkim Divyang Sahayata Samiti). She is presently serving as the Project Director of Sikkim Divyang Sahayata Samiti, Gangtok working for the welfare of Divyang people and assisting them in different ways, so that they can live life without any problem and difficulty. Miss Droupadi is recognized all over India for her role in the upliftment and welfare of Divyang people of Sikkim and other parts of India.

2. Born on 11 September, 1956, Miss Ghimiray had education upto 10th standard. Thereafter, she was appointed in the school of health programme at the STNM Hospital on 10th May 1982. Later she underwent training in artificial limbs in New Delhi in 1996, after which she continued her service at the STNM Hospital to become the service ANM at the Hospital. She started her journey to serve divyang people by organizing Charity Programme for divyang children at PNG School, Gangtok in the year 1983.

3. Late Shri Suk Bir Ghimiray, father of Miss Ghimiray, lost his one leg in an accident in the year 1980. She saw her father struggling to walk and doing other mundane affairs. During that time, she thought to serve Divyang people and she is still continuing to help the Divyang people.

4. Miss Ghimiray started taking orthopedic patients to Bhagavan Mahavir Viklang Sahayata Samiti, Jaipur for the fitment of artificial limbs since 1986. She started Bal Vikash School (Supported by Sai Samiti) for the Moral upliftment of Children of Upper Chanmari & Lower Chanmari in the year 1987. Sikkim Viklang Sahayata Samiti (SVSS) has opened center and started making artificial limbs since February 2001 and till date more than 4000 limbs have been made and has been used by patients from not only from Sikkim, but from nearby states, NE etc. From 2002, SVSS started organizing screening and treatment camps (Ortho) and collaborated with Bhagwan Mahavir Vikalang Centre, Jaipur, Narayan Sewa, Udaipur, NIMS Hyderabad, DRDO Delhi, Smile Train Agra, Operation Smile, Bangalore and Society of Human Welfare and Empowerment, Gurgoan, Hariyana. Sikkim SVSS has started survey camp for identification of PWDs in collaboration with the Health Department, Social Justice, Empowerment and H.R.D.D. Govt. of Sikkim in 2004 and has also started providing skill training to divyang people in different fields such as computer course, beautician course, khada making, poultry farming, mushroom farming, etc since 2006. Most of the divyang students who are trained by these courses are employed in Government and Private Sector.

5. In the year 2008, Sikkim Viklang (Divyang) Sahayata Samiti begun sending Cleft Lip/Palate patients to G. G. Medical Institute, Agra for surgery and later Saraswat Hospital, Agra. Till now more than 500 surgeries have been done successfully. From the year 2012, Sikkim Viklang (Divyang) Sahayata Samiti started organizing camps for post burnt surgeries at S.T.N.M Hospital, Govt. of Sikkim and Manipal Hospital. SVSS opened Multipurpose Rehabilitation Center at Reshep, Tokal Bermiok, South Sikkim for skill training since 2010.

6. Miss Ghimiray is the recipient of numerous awards and recognitions. She received "State Award" from Govt. of Sikkim on the occasion of Republic Day for her meritorious service in 2005. She was awarded "People Choice Award" From North-East TV in 2006. She was awarded by the CNRI award "PILLAR OF CIVIL SERVICE SOCIETY" conferred by the Honourable President of India in 2008. She also received "NATIONAL FLORENCE NIGHTINGALE AWARD FOR NURSING PERSONNEL" from Honorable President of India at Rastrapati Bhawan, New Delhi in 2011. She received "STREE SHAKTI PURASHKAR" at Vigyan Bhawan, New Delhi by the Honorable President of India in 2012. She was also awarded "Bhaorao Devras Seva Samman" at Hindi Sansthan, Ghaziabad on 21st March, 2016.

पद्म श्री

सुश्री द्रोपदी घिमिरे



सुश्री द्रोपदी घिमिरे एक विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता तथा सिक्किम विकलांग सहायता समिति (जिसे फिलहाल सिक्किम दिव्यांग सहायता समिति के नाम से जाना जाता है) की संस्थापक अध्यक्षा हैं। आप फिलहाल सिक्किम दिव्यांग सहायता समिति, गंगटोक, जो दिव्यांगजनों के कल्याण के लिए कार्य कर रही है तथा उनकी ऐसे विभिन्न तरीकों से मदद कर रही हैं जिससे कि वे बिना किसी समस्या अथवा कठिनाई के अपना जीवनयापन कर सके, की परियोजना निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। सुश्री द्रौपदी सिक्किम तथा भारत के अन्य भागों में रह रहे दिव्यांगजनों के उत्थान एवं कल्याण में अहम भूमिका निभाने के लिए पूरे भारत में विख्यात हैं।

2. आपका जन्म 11 सितम्बर, 1956 को हुआ। आपने 10वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात आपको दिनांक 10 मई, 1982 को एसटीएनएम अस्पताल में स्कूल ऑफ हेल्थ प्रोग्राम में नियुक्त कर दिया गया। बाद में आपने वर्ष 1996 में नई दिल्ली से कृत्रिम अंगों संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त किया और इसके बाद आप एसटीएनएम अस्पताल में अपनी सेवाएं देती रहीं और उसी अस्पताल में सर्विस एएनएम बन गईं। आपने वर्ष 1983 में पीएनजी विद्यालय, गंगटोक में दिव्यांग बच्चों के लिए धर्मार्थ कार्यक्रम का आयोजन करके दिव्यांग व्यक्तियों की सेवा करने की अपनी यात्रा का शुभारंभ किया।

3. आपके पिता स्वर्गीय श्री सुक बीर घिमिरे की वर्ष 1980 में हुई एक सड़क दुर्घटना से एक पैर नहीं रहा। आपने अपने पिता को चलने तथा रोजमर्रा के अन्य कार्य करने में दिक्कतों का सामना करते हुए देखा। उसी दौरान आपने दिव्यांगजनों की सेवा करने की ठानी और आप अभी भी निरंतर दिव्यांगजनों की सहायता कर रही हैं।

4. आपने अस्थि रोगियों को कृत्रिम अंग लगाने के लिए वर्ष 1986 से भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर ले जाना शुरू किया। आपने वर्ष 1987 में अपर चानमारी तथा लोअर चानमारी के बच्चों के नैतिक उत्थान के लिए बाल विकास विद्यालय (साईं समिति द्वारा सहायता प्राप्त) की शुरूआत की। सिक्किम विकलांग सहायता समिति (एसवीएसएस) द्वारा एक केन्द्र का शुभारंभ किया गया और उसमें फरवरी 2001 से कृत्रिम अंग बनाने की शुरूआत की गई और अब तक 4000 से भी अधिक कृत्रिम अंग बनाए जा चुके हैं। ये अंग न केवल सिक्किम अपितु आस-पास के राज्यों तथा पूर्वोत्तर राज्यों इत्यादि के रोगियों को प्रदान किए जा चुके हैं और उनके द्वारा इनका उपयोग भी किया जा रहा है। वर्ष 2002 से सिक्किम विकलांग सहायता समिति ने जांच एवं उपचार शिविरों (अस्थि रोग) का आयोजन करना प्रारंभ किया और इसने भगवान महावीर विकलांग केन्द्र, जयपुर, नारायण सेवा, उदयपुर, एनआईएमएस हैदराबाद, डीआरडीओ दिल्ली, स्माइल ट्रेन आगरा, ऑपरेशन स्माइल, बंगलौर तथा मानव कल्याण एवं सशक्तीकरण सोसाइटी, गुड़गांव, हरियाणा के साथ सहयोग किया। सिक्किम विकलांग सहायता समिति ने स्वास्थ्य विभाग, सामाजिक न्याय, सशक्तीकरण विभाग एवं एचआरडीडी, सिक्किम सरकार के सहयोग से वर्ष 2004 में पीडब्ल्यूडी की पहचान के लिए सर्वेक्षण शिविर का आयोजन करना प्रारंभ किया तथा वर्ष 2006 से दिव्यांगजनों को कम्प्यूटर कोर्स, ब्यूटीफिकेशन कोर्स, खाद मेकिंग, मुर्गी पालन, मशरूम की खेती इत्यादि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना प्रारंभ किया। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित अधिकांश दिव्यांग विद्यार्थियों को सरकारी तथा निजी क्षेत्रों में रोजगार मिल गया है।

5. वर्ष 2008 में, आपने क्लैफ्ट लिप/पैलेट रोगियों को शल्य चिकित्सा के लिए पहले डीजी मेडिकल इंस्टीट्यूट और बाद में सारस्वत अस्पताल, आगरा भेजना शुरू किया। अब तक 500 से भी अधिक शल्यचिकित्साएं सफलतापूर्वक की जा चुकी हैं। वर्ष 2012 से सिक्किम विकलांग (दिव्यांग) सहायता समिति ने एसटीएनएम अस्पताल, सिक्किम सरकार तथा मणिपाल अस्पताल में पोस्ट बर्न्ट सर्जरी (जलने के उपरांत की जाने वाली शल्यचिकित्सा) के लिए शिविरों का आयोजन करना प्रारंभ किया। सिक्किम विकलांग (दिव्यांग) सहायता समिति द्वारा वर्ष 2010 से रेसिप, टोकल बेर्मियॉक, दक्षिण सिक्किम में कौशल प्रशिक्षण हेतु मल्टीपरपज पुनर्वास केन्द्रों का शुभारंभ किया।

6. आपको विभिन्न पुरस्कारों एवं प्रशस्तिपत्रों से विभूषित किया गया है। आपको वर्ष 2005 में सराहनीय सेवा के लिए गणतंत्र दिवस के अवसर पर सिक्किम सरकार की ओर से "स्टेट अवार्ड" से नवाज़ा गया। आपको वर्ष 2006 में पूर्वोत्तर टीवी की ओर से "पीपल च्वाइस अवार्ड" से सम्मानित किया गया। आपको वर्ष 2008 में भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किए जाने वाले सीएलआरआई पुरस्कार "पिलर ऑफ सिविल सर्विस सोसाइटी" से अलंकृत किया गया। आपको वर्ष 2011 में राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में भारत के माननीय राष्ट्रपति की ओर से "नेशनल फ्लोरेंस नाइटिंगेल अॅवार्ड फॉर नर्सिंग पर्सोनल" से भी सम्मानित किया गया। आपको वर्ष 2012 में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में भारत के माननीय राष्ट्रपति की ओर से "स्त्री शक्ति पुरस्कार" से नवाज़ा गया। आपको दिनांक 21 मार्च, 2016 को हिंदी संस्थान, गाजियाबाद में "भैरो देवरस सम्मान" से विभूषित किया गया।